व-२४

श्रीसद्गुरवेनमः

श्री

जानकीस्नेहहुलासशतक

अनन्तश्री

युगलानन्यशरणजीमहाराज

विरचित

श्रीसद्गुरुग्रन्थमालाका

प्रथमपुष्प

अनन्तश्रीयुगलानन्यशरण जीमहाराज

कृत

श्रीजानकी सनेह हुलास शतक

प्रकाशक

श्रीपुरुषोत्तम शरण जी

श्रीसद्गुरु सदन

पाप मोचन घाटश्रीअयोध्याजी

मुद्रक

डाक्टर डी, डी, आनन्द आनन्दप्रेसस्वर्गद्वार

अयोध्याजी

न्योछावर एक आना | ता: १६ जुलई सन १९२५ ई० | प्रथमबार १०००

श्रीसद्गुरवेनमः

श्रीसीतारामाभ्यांनमः

भूमिका

विदित हो कि हमारे श्रीबड़े महाराज अनन्त श्रीस्वामी युगलानन्य शरणजी महाराज में जिसप्रकारकीइष्ट अनन्यता कहीसुनी जातीहै वह आपके शुभनाम के अर्थसेही सम्यक प्रकारसे विदित हैं। आपने छोटे बड़े छियासी (८६) ग्रन्थ निर्माण किये, जिनमें श्रीसीतारामजी महाराजके नामरूप लीला धाम को अनेकप्रकार के चमत्कारोंसे वर्णन करने के सिवाय दूसरा विषय हैं ही नहीं इन सब ग्रन्थों के(उत्सुक प्रेमीरसिक सज्जनों के विनोदार्थ)प्रकाश करने केलिये हमारेपूज्य पाद अनन्त श्रीस्वामी रामवल्लभाशरण जी महाराजकी अधिकोत्कण्ठाथी उन्ही स्वामी जी महाराज की कृपा प्रेरणा से उन ग्रन्थोंमेंसे यहश्री जानकी सनेह हुलासशतक नामक मधुर पुस्तिका जिसमे श्रीजनकलड़ैती श्री किशोरी जू के नाम रूप माधुरी की अपूर्वोत्कंठा सप्रेम वर्णित है। वह प्रकाश कीजातीहै श्रीजानकीवल्लभीय प्रेमीरसिक सज्जन इसकी माधुरी को अवलोकन कर मुझे इस मधुरपुस्तिकामें सच्चे प्रेमप्रदान करने की कृपा करें।

विनीत

पुरुषोत्तमशरण

श्रीसद्गुरसदन अयोध्याजी

* श्रीगुरुपदपद्म परागाभ्यांनम *

* श्री राममनोहरि सीतायैनमः *

॥ अथ ॥

श्री जानकी सनेह हुलास शतक।

दोहा

रसिकराज रसराज नव, उपदेशक सिरताज।
बंदौं श्रीसत गुरु सुपद, पंकज परम सुसाज ॥१
श्री श्री युगलप्रिया मधुर, नाम महामुद धाम।
उर दुराय राखत सदा चाखत रस अभिराम ॥२
श्री श्री युगलकिशोर प्रिय परिकर परम अनूप।
प्रनमो तिनके पद कमल करन सुमङ्गल भूप ॥३
रसिक सनेही जे सरस श्री सीताबर खास।
तिन के पद पंकज नमो महामोद रसरास ॥४
श्री सुवरन सोहन सदन अमित मदन दुतिदेन।
श्रीजानकि वल्लभ भजे भाविक भाव सुखेन ॥५

श्रीसीता शुचिनाम से सहित सनेह हुलास।
बरनों बिशद विनोद हित अहित हरन अनयास ६
श्री श्री सीता स्वामिनी नाम लोक अभिराम।
प्रीतम प्रेम प्रकाश कर निकर रहस आराम ॥७
बिमल बिहार बिचित्र बर बाग राग फल फूल।
फूलित फलित सुनाममनु मन विहंग मुदमूल ॥८
नाम काम प्रद बाम गति गारत करन हमेश।
युगलानन्य सु जीह जपि पाइय परम परेश ॥ ६
मोद प्रमोद बिनोद गुन दिव्य भव्यता खान।
श्रीमिथिलाधिप नंदिनी नाम प्रान प्रियप्रान ॥ १०
श्री सीता बर प्रानप्रिय होत तुच्छ तर जीय।
जो श्रीरसिकन गुरु कृपा रटे नाम शुभ सीय ॥ ११
महा मधुर रस धाम श्री सीता नाम ललाम।
झलक सुमन भासत कबहुँ होत जोतअभिराम ॥ १२
नाम ब्याज युत जपत जन लेत सुजीवन लाह।
और कौन महिमा कहौं होत बिबस सियानाह १३
बदन बिलोकत ही रहैं तासु सुहावन श्याम।

जा श्रीप्रिया प्रमोदिनो जपत निरन्तर नाम ।१४
सुधा सीठ मानहु सुधा रटत मधुर तर नाम ।
रहत न हिय अभिलाष पुनि पावत परमाराम ॥१५
ललित लाड़िली रस रहस अगम सुगम सुठिहोय।
रटे निरन्तर नाम श्री सकल बिकल मत खोय॥१६
बरनि सुनावों सुखद निज नाम अर्थ अभिराम।
जाके श्रवन मनन किये हियेबसें सिय राम॥१७
अर्थ समर्थ सुनाम को हैं अनन्त गुन पार।
श्रीसुचिस्वामिनि मयाबल बरनौंबुधि अनुसार॥१८
सी सोमा सद रसन शुचि सुखमा सरस सुभाग।
स्वानुकूलता साज शुभ सौंपत अमल अदाग॥१९
ता तारक तम तीन तन तरुन तरनि सममानु।
युगलानन्य शरण तरक तारन तार प्रधानु॥२०
सी सिंदूर सदृश लसत भक्ति भामिनी भाल
ता ताशदिक शक्ति को हेतु विचित्र रसाल २१
सी सिर भूषन विश्व कर निर्दूषन गुन खान।
ता तप हर तारीफ तन तोषत ज्ञान प्रधान।२२

ता तर तुला विचारु चित तौलत नेह नबोन।
समते जे इनमें रमे अपर ऊन दिन दीन ॥२३॥
सो सोई सीधू मधुर पियत छकावन हार।
रैन ऐन माते रहत मत्त रसिक सरदार॥२४
ता तौसीफ़ शरीफ़ श्री शिव श्री पति मन माँझ।
बसत निरन्तर नेह सजि बिसरत भोर न साँझ।२५
सुभग सत्व गुन जीव श्री सिया सकार अकार।
अमल अनूपम नाद को वीज बिपुल बिस्तार॥२६
ई दीरघ लघु बूझिये मिलित संधि मुदमूल।
काम रमा कारन कलित अविचल जोति अमूल।२७
अग जग मय जग जाल मधि बीज शक्तिअरु काम।
युगलानन्य बिचारि चित भजो निरन्तर नाम॥२८
हल सकार सरकार श्री सीता रूप अनूप।
रमित रेफ सम सो सदा शब्द सार रस भूप॥२९
श्रीदशस्यन्दन सुवन भल भुवन विभूषन बोध।
समुझो सुजन सकार सुख सारमांझ अविरोध।३०
रसिक पारखी प्रेमनिधि मगन मानिहैं मोद।

युगलानन्य शरनतिन्हैं निसिदिन नाम विनोद।३१
तनु त्रिस्तारन अर्थ बल विधि तकार मधिमानु।
सूक्षम करन सदर्थगहि श्री शिव मन अनुमानु।३२
वासुदेव वाचक विमल लघु अकार इति मन्त।
युगलानन्य शरन जिन्हैं जपत ज्ञान निधिसन्त ३३
श्रीअकार गुरु प्रेमपर परिकर जुगल विचारु।
नाम नेह सत सुधा से भीजि रहे अविकारु।।३४
श्रीसीता निज नाम मधि षट कल कला विचित्र।
युगलानन्य शरन लखे भाविक भेद पवित्र।।३५
श्री श्रुतिकीरति मांडवी ललित उर्मिला रूप।
इनहीं के अन्तर लसत समुझे रसिक अनूप।।३६
सकल पदारथ सार श्रीसीता नाम मँझार।
रटन नेह कूची बिना खुले न रहस भँडार।।३७
मरम न पावहिं रूच्छ जन हलके बजन समेत।
युगलानन्य शरन रहस परखे रसिक सचेत।।३
अर्थ चतुर्थी बीज वर नमस्कार सुख सार।
रसना श्री नामहिं जपत होत उदित अविकार।।३९

राम नाम अभिराम मधि हैं जे अर्थ समर्थ।
सो समूह यह सुधाथल लसत विमर्दन ब्यर्थ॥४०
श्री सीता स्वामनी शुचि नाम समान न नाम।
श्रीसुखसागर हूँ दिये दायक अति आराम॥४१
शरनागत बत्सल असल अमल सुजस परिपूरि।
अवध बिहारी से अधिक कथा सजीवन मूरि॥४२
श्रीस्वामिनी प्रसाद बल पाय रसिक सिरताज।
परखे नाम परत्व पर अति अनूप छबिछाज॥४३
नाम मनोहर मध्यही रूप अनूप सदंग।
रसिक अनन्यन को सुलभ देन हार नवरंग॥४४
बदन सदन सुख हरष कर सरस सकार अनूप।
ध्यान समेत सुजीह जप करत भरत रसभूप॥४५
दीरघ ई रसखान चख चितवन चमन समेत।
फूलि रह्यो अनुराग शुचि सुमन रमन इतिकेत॥४६
परम प्रकास विलास निधि नैन चैन प्रद चैन।
युगलानन्य शरन निखिल नेह नाह निजऐन।४७
ह्रस्व इकार बिहार पर करत किशोरी स्वच्छ

युगलानन्य शरन चमक अति अद्भुत द्युतिदच्छ ४८
मन भावन रघुलाल को जानु उरोज तकार।
रस रहस्य सोहन सदन सखी प्रमोद अगार।४९
प्रथम अकार उदार उर उदर नाभि गम्भीर।
द्वितिय तृतिय कटिजंघपद लखेंउपासक धीर।५०
श्री स्वामिनी स्वरूप सुठि नाम माँझ शक हीन।
चाहिय चित्त सनेहसद असद दमन पनपीन।।५१
नाम अर्थ रचना रचित कलित मिलित नितरूप।
श्रवन मनन अनुदिन करत पावत प्रभा अनूप।५२
सी उचरत सीतल करन सानुकूल सियराम।
युगला नन्य शरन तृषा हरन तकार सुदाम।५३
आ आनंद अजूब अल दायक अमल अडोल।
तीन उचारत भीन सुख समुझे रहस अमोल।५४
क्रिया रूप गुन लाड़से सहित सुहावन नाम।
चारु चतुर चित चैन प्रद प्रिय पावन पनधाम।।५५
श्री रघुनंदन बस करनि हरनि हीय नित पीय
आह्लादिनी अभयप्रदा तारनि तमचर तीय।।५६

कृपाभरी करुनामयी वत्सलता निधिनाम।
अनु दिनअनुकम्पानिलयअमित दिव्यगुनधाम५७
सुभगा लावण्या वरा मधुर मनहरा नाम।
रूपवती आदिक अमल रूपनाम अभिराम॥५८
लली लाड़िली सियाजू ललित लड़ैती नाम॥
लाड़ अनूपम नामउर सौंपत अति अभिराम।५९
वारिहुँ ये रस पर सरस। दरस परत नित नीक।
रटौनिरन्तर प्रेमपन सहित रहित मतफीक॥६०।
सिया नाम मालागरे मेरे कबहुँ रसाल
संतत शोभित होयगी समन दुरूह दुसाल॥६१॥
श्री सीता शुचि स्वामिनी नाम मनोहर माल।
पहिरावैंगा कृपाकरि कबहुँ सु रसना बाल॥६२
श्रीकर सुगुन समेत नित नाम मोद दातार
रटिहैं मेरो मन अमन होय खोय व्यवहार॥६३
रसनारसना सम समुद प्रीति परा रुचि पास।
विहँग चपल मन बाझिहै नाम रटत रस रास॥६४
श्री मिथिलेश सुनंदिनी नाम जपत निसि भोर।

अनायास घायल घने घूमत जहँ तहँ चोर ॥ ६५
जनक किशोरी नाम विन मन बस होन महाल ।
युगलानन्य शरन सुधी समुझो सुवच रसाल ॥ ६६
श्रीसिय नाम प्रताप से शंकित काल कराल ।
निज वैभव बल छल नहीं किंचित करत कसाल ६७
उर अनेक अभिलाष सद साख जपो नित नाम ।
मनो राजबहु भाँति करि परि हरि असद कलाम ६८
कंज मंजु रंजित रुचिर नाम मधुप मन मोर ।
पान करत नहिं तोषि है जिमिधन मूसत चोर ॥ ६६
घन सुनाम वर वारि युत अति अद्भुत अभिराम ।
मनमयूर लखि सुनि सुधुनि कब नाचिहै मोदाम ७०
रस मय ब्योम सुहावनो मन भावनो बिहार ।
बुधि डोरी वोरी सुधा नाम पतंग प्रकार ॥ ७१
कबहुँ चढ़ावैगो रसी रसना बाल सबोध ।
निसिदिन दुति देखत रहों जहों विकार विरोध ॥ ७२
नाम स्वामिनी भूप मनि जानि मानि बिश्वास ।
शुचि सेवक ह्वै कबहुँ नित सेवों सहित हुलास ॥ ७३

सुघन सार स्वाती नखत नाम महा मुद धाम ।
चित चातक चातुर कदा करिहै प्रेम ललाम ।।७४
विश्व बीच जावत सुजल तिन कृत हरष विहाय ।
श्री स्वामिनी सुनाम सन सजिहै नेह निकाय ।।७५
श्रीप्रतिमा सौंदर्य्यनिधि जनक लाडिली नाम ।
मेरो मन पूजक अमल कब पूजिहै अकाम ।।७६
सुख रस सागर रतन मनि नाम महा मुद खानि ।
मरजीवा ह्वै काढ़िहै सकल भाँति रुचि ठानि ।।७७
रुचि गुन सूची नेह नव सुमन स्वामिनी नाम ।
रसना मालिन गूंथि है कबहुँ अनूपम दाम ।।७८
भूषन निरदूषन हृदै ज्ञान ध्यान इति मान ।
नाम मनोहर महामनि ह्वै है जटित सदाम ।।७९
श्री अनूप मनि संकलित लसत आभरन नीक ।।
युगलानन्य शरन सुमन कीनी यह मत ठीक ।८०
फल रसाल लावण्य निधि अति अनूप सिय नाम
रसना सतत सवाद सुचि कब करिहै बसु जाम ।।८१
नाम सुधा कर जस सुधा पूरत सतत अशंक ।

चित चकोर मनि चन्द सम कब ह्वै है अकलंक ।। ८२

रबि प्रकाश निधि जनकजा । नाम मधुर रसधाम ।
भानु मुखी सम सुमति मम होय कबहुँ बिधि बाम ८३

कमल अमल श्री जानकी नाम भरित मकरन्द ।
मम मन मानस में कबहुँ करै बिकास अमन्द ।। ८४

सिया सलोनी स्वामिनी नाम निरन्तर जाप ।
कबहूँ मन करिहै ललकि छोड़ि छली छल छाप ।। ८५

श्रीसीता निज नाम सम सुधा औषधी मान ।
सरुज सदृश मन चाखिहै करन मोह रुग हानि ८६

संजीवनी सुनाम गुन गहि लहि परमानन्द ।
शिव समान मन जीविहै बिगत दोष दुखद्वन्द ८७

सिता कंद मिसिरी सरिस मधुर स्वामिनी नाम ।
सुधा सार रसपान नित करिहै होय अकाम ।। ८८

बानारति अनमोल रस भीना परम बिचित्र ।
चाह चौगुनी तार युत बाजत राग पवित्र ।। ८९

नाम अनूपम बीन वर रसना कबहुँ बजाय ।
अति उमंग उर पाइहौं तिहुँ तन तार तजाय ।। ९०

गंसी सुख संसी तसी ललित काढिली नाम ।
सुमुख धरैंगे भाव जुत परिहरि असत कलाम ।६१
दीपक रस रसराज श्री नाम प्रकाश अडोल ।
मम मानस सद सदनमधि कब ह्वै है अनमोल ।६२
महा मोद दातार श्री नाम सुमोदक दिव्य ।
सरस सनेह सुधा सहित कबहुँ पागिहै भव्य ।६३
सद गुरु सुभग उदार मनि नाम अनूपम जानि ।
शिष्य होइ चित सेइ है निरमायक मुद मानि ।६४
चारु चित्र चिंतत चमत्कार नाम छबि धाम ।
दिल दिवार मधि लिखैंगे प्रेम सहित बसु जाम ६५
रसने रटु रघुनन्द प्रिय प्रान पियारी नाम ।
धिक धिक वारहिं वार तोहि रमत कुबानी बाम ६६
नाम रमेश सुरेश सम रसना रमा निहारु ।
सची समान सनेह शुचि सज सम्बन्ध उदार ।६७
रसना बानी नाम विधि सविधि पूज चित लाय ।
उभय लोक मंगल परम नेह नीर न्हाय ।।६८
गौरी गौरव गुन भरी द्विज वासिनी बिचारि ।

नाम शम्भु अर्द्धाङ्गिनी ह्वै करु विशद विहारि ॥ ९९

रसना लेखनि पात्र पन मसी मनोहर नेम ।
उरकागज उज्वल ललित लिखिसिय नामसप्रेम १००

द्विजन बीच वर बास तव त्यागि नीच करतूति ।
युगल लोक परिहास अति रसने बूझ विभूति १०१

अधर वसन को त्याग करि लाजन लागत मूढ़ ।
द्विज मंडली समीप तउ नहिं विचार गुनगूढ़, १०२

श्री सिय नाम अनूप बन विमल दुरे तिललाज ।
रहे अन्यथा हान अति सब प्रकार खर खाज । १०३

रसने तु नव नागरी गुनन आगरी नाम ।
क्यों न भजे संकोचतजि सजिमन मोदललाम १०४

सखी किंकरी भाव भल धारि सुरसने नित्त ।
रमो निरन्तर नामसिय निजहियखोल सुचित्त १०५

नाम नयनजा सरस शुचि अशुचि ताप हरनेश ।
रसने मज्जन करत नहिं रचि अंतर आवेश ।१०६

मानसरोवर नाम सिय मम मन मधुर मराल ।
तौनसुथल वर बाससजु तजु जग जलधिजवाल १०७

खान पान सनमान हित रहत पाँवरन प्रीत।
इमि कबहूँ मन लागिहै सुमिरत नाम पुनीत।१०८
अबुध हठी बहु बैन जिमि नहिं मानत कोउकाल
याहीविधि अति हठसहित कब रटिहौंमुदमाल१०९
पर पति मधि नव नागरी रचत जौन विधि नेह।
चलत बदत सोवत सोई इमि कब नाम सनेह।११०
जैसे स्वर्गी पतन के समय सुदि विरुचि होत।
याही भाँति सुनाम रुचि ह्वै है कबहुँ उदोत।१११
रूप जीविका वपु यथा पल पल सजत सिंगार।
मम मन कबहूँ नाम छवि सजिहै सरस सँवार,।११२
नदी अमोघ प्रवाह जिमि नहि निरोध कोउकाल।
अमल नाम रस एक कब जपिहौं होय निहाल ११३
हंस बिचारि बिलोकि उर त्यागि काक करतूति।
नाम छीर नित पान करुपरि हरि अरस विभूति११४
तैल धार सम एक रस स्वाँस स्वाँस प्रति नाम।
रटौं हटौं पथ असत से बसौं रंग निज धाम ॥११५
दीप सिखा निर्वात जल लहर हीन तेहि भाँति।

कब ह्वैहै मन नाम जप जोग रहित भव भ्रान्ति।११६
यथा विषय परिनाम में बिसर जात सुधि देह।
सुमिरत श्रीसिय नाम गुन कब इमि होय सनेह११७
अंध नयन श्रुति बधिर वर बानी मूक सुपाय।
याहूते सत गुन हरष कबहुँ नाम गुन गाय ॥११८
श्री सरजू तट पुलिन मधि निसा उजारी माँह।
हेसिय कहिकब बिवसह्वै रहिहौं द्रुति द्रुमछाँह।११६
लता लवंग कदम्ब तर तर दृग पुलकित गात।
जयति जानकी सुजयजय जपिहौं तजिजगबात१२०
नाम कथा सिय स्वामिनी व्यथा बहावन हारि।
सुनि श्रवननि सुरसाइहौं चाह चौगुनीधारि ॥१२१
हे रसने सिय नाम रस चाखु राखु अभिलाषु।
बार बार तोसे कहौं जनि इत उत बच भाषु ॥१२२
सकल भूमि लहि भूप जिमि नहिं मानत परितोष।
ऐसहि जन्म कदम्ब रटि चाह बढ़े चितचोष ॥१२३

मित्र परम प्रिय आगमन जिमि चिन्तत नितप्रीत
तैसेहि सियजू नामकब जपिहौं तजि भवभीत१२४
रटन समय इमि हरषि हौं यथा सुतिय पतिपाय।
युगला नन्य सनेह सुख सौगुन हिय सरसाय१२५
यथा उदार हृदय सदा रहत दान उत्साह।
ऐसेही श्रीनाम कब रटिहौं अति चित चाह।१२६
रसने लाड़िली लाड़ से लेहु लाड़िली नाम।
परनिंदा गुंजा निदरि पहिरु नाममनि दाम।१२७
सी शोभा सब विश्व बन बिशद स्वाद वरबीज,
युगला नाम शरन तरो ताजा ता चितचीज।१२८
सकल ईश सेवित सुधा सिंधु नाम सिय स्वच्छ।
युगलावरन जिय आभरन करननरन द्युतिदच्छ१२९
सी सकार शृङ्गार मय ललित युगल रस रूप।
सख्य इकार रसालसुठि श्रुतिसद सुबच निरूप१३०
रस पाँचो श्रीजानकी नाम मध्य निरधारु।

सूक्षम मति से समुझिये भाव भावनागारु ॥ १३१

शांत क्रांत रस सरस सोइ रूप तकार प्रमान ।
गुरुअकार सोंदास्यरस जानहिंसुबुध सुजान १३२

लघु अकार वात्सल्य रस विगतनिरसतारीत
यहिविधिपांचो रसविदित रसिकनहृदयप्रतीत १३३

पांचो रस बर बीज श्री नाम बिभव अनुकूल
युगलानन्य शरन मधुर रहस सुसरजूकूल ॥ १३४

इष्ट नाम गुन रूप जस जितनो कहेसुथोर
युगलानन्यशरन कुमति तरक करहिं तमघोर १३५

बिना बिचारे नाम मनु मानस मिलै न मोद
ताही से संतत उचित मनन सुनाम बिनोद ॥ १३६

तत्वमसी वेदान्त को महावाक्य सिद्धान्त ।
सोउ सम्भव सिय नामसे बिनाबूझ भवभ्रान्त ॥ १३७

तत पद रुचिर तकार है त्वं पद मधुर अकार
सी मिलि असी प्रसिध्दही कीजेविशद विचार १३८

सीताराम सुमध्य ही अमितमंत्र सब काल ।
ताते इनही को रटो पावो सुमति रसाल ॥ १३९ ॥

श्री रघुनन्दन नाम नित करे जो कोटि उचार।
ताते अधिक प्रसन्न पिय सुनि सिय एकहु बार १४०
जानकि बल्लभ नाम अति मधुर रसिक उरऐन
वसे हमेशे तोम तम समन करन चित चैन ॥१४१
जो भीजै रस राज रस अरस अनेक विहाय।
तिनको केवल जानकी वल्लभ नाम सुहाय॥१४२॥
सीताराम सुनाम मधि युगल भाव प्रियपुष्ट।
जंग जोग संजोग नहिं सुमिरत सब सुखसुष्ट॥१४३
जा जपि जागत मोहनिसि तिमिरतोम करिदूरि
न निरमल नवनूरप्रद नाशक असद करूरि।१४४
की कीमत कामिलकुशल असल जानिबो जोग
युगलानन्य सुतीनहूं बरन हरन भव रोग॥१४५
ब बनचरवा वनविभू विभव विलच्छन बीज।
लसत लकार ललामलय कारन करनतमीज१४६
भ भगवत्ता गुन भजन भावभावना जीव।
जानकिवल्लभरटन करु सकलश्रुतिनपयघोव१४७
ऐसेहि अगनितभाँतिसो नामअर्थ गुनिसार।

छिनहूँ भर न बिसारिये रटिये बारहिं बार ॥ १४८ ॥
जपहिं स्वामिनी नाम नव मोद सहित उत्साह
लेत देत प्रीतम तबहिं सर्बस वारि सचाह ॥ १४९
रट्यो न सीता नाम जिन कट्यो न तिन दुख पास
लट्योफिरतजहँ तहँ अक्रमविगतस्वरूपप्रकास १५०
प्रीतमकी जीवन जरी रसिकन की सुरधेनु ।
भक्त अनन्यन की लता सुरतरु सिय पदरेनु १५१
नाम सर्व पर स्वामिनी सीयरुचत जेहि नाहिं ।
तेहिढिगबैठत पातकी होततुरत चख चाहि ॥ १५२
बड़ा योग्यतालोकमधि अधिकपूज्य जगख्याति।
श्रीसिय नाम सनेह से विमुख जानु जड़ जाति १५३
सीयनाम मानद गुनद गौरव देत विशेष ।
ताते गुरु गौरी गिरा गनप गनत गुनशेष ॥ १५४
श्रीसीता बर नाम रस सरसलहै तब जीव।
जो श्रीसियजू नामगुन रटे सप्रेम अतीव ॥ १५५
युगलकिशोर सुनाम जस जाहि बोचनिसिभोर।
राखे रहो सचेत चित हित अनुरागनिचोर ॥ १५६

वार बार बर विनयकरि याँचत श्री सिय देहु।
लोक उभय आसा रहित निजपियनामसनेहु ॥ १५७
भुक्ति मुक्ति की कामना रही नरंचक हीय।
जूठनखाय अघायनित नाम रटौंसिय पीय ॥ १५८
श्री श्रीयुगलप्रिया सुगुरु कृपा अहेतुकपाय।
श्रमविहीनबिरचतभयो सतत सतकसुखदाय ॥ १५९
पूरन पूरन चन्दइह सतक सनेह हुलास।
प्रिया नाम रसिकन हृदय व्योमसजो संकाश ॥ १६०
जो यह सतक सनेह से सजे पाठ व्रत ठानि।
प्रियाप्रसाद लहैं अबस विषमरसमकरिहानि ॥ १६१
युगलजाममधिप्रेमनिधि सतक सनेह हुलास।
युगलानन्य शरन रच्यो पायो परम सुपास ॥ १६२
रैन माझ सरजू पुलिन पेख्यो ख्याल अनूप।
कहत न मुखशोभितसुधी समुझ कृपाअनूप ॥ १६३
श्री सिय कुंज निवाससजि बाढ़्योनामविनोद
तेहि थल बरन्यो बरनबर अपरविहाय समोद ॥ १६४

श्री जानकी नवल चरण जासु जथारथनेह।
अधिकारी रस रहसके सबविधिगुन गनगेह।। १६५

इतिश्री युगलप्रिया सुपदकिंकर युगलअनन्य।
लिखि सोधनयुत व्याहदिन सरजूतीरसुधन्य। १६६

इतिश्री श्री श्री श्री श्रीश्री स्वामी महाराज
श्रीजीवाराम मोद धामकिंकरानुकिंकर
श्रीयुगलानन्य शरण प्रणीत
श्रीजानकीसनेहहुलासशतक
सम्पूर्णम्